भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

2026 जुलाई 28 से अगस्त 3 तक शहीद स्मारक सप्ताह मनाएँ!

भारत की क्रांतिकारी आंदोलन के नेता कॉमरेड्स किशन दा, कोसा, मोडेम बालकृष्ण, पाका हनुमंतु, पतीराम मांझी (अनल), खाता रामचंद्र रेड्डी, सहदेव सोरेन, हिडमा के साथ — जनता के लिए अपने प्राण अर्पित करने वाले अमर शहीदों के राह पर आगे बढ़ें।

अमर शहीदों के त्याग की प्रेरणा से क्रांति आंदोलन का पुनर्निर्माण करें!! पार्टी संस्थापक नेता, महान गुरु कॉमरेड्स चारू मजूमदार और कन्हई चटर्जी को लाल सलाम!!!

जुलाई 28 हमारा शहीद स्मृति दिवस है। भारत के नव जनवादी क्रांति आंदोलन की विजय के लिए संघर्ष करते हुए प्राण गंवाने वाले सभी वीरयोद्धाओं को याद करने का दिन है। 1972 की 28 जुलाई को हमारी पार्टी के संस्थापक नेताओं में से एक, भारत के क्रान्तिकारी मार्गदर्शक कमरेड चारू मजुमदार की पुलिस द्वारा हत्या की गई थी। उस दिन नव जनवादी क्रांति में तमाम शहीदों की स्मृति में हमारी पार्टी 28 जुलाई से 3 अगस्त तक शहीद स्मृति सप्ताह मनाती है।

इसी तरह इस वर्ष भी 28 जुलाई से 3 अगस्त तक अमरवीर स्मृति सप्ताह मनाएं—भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) पार्टी आपनी कतार, क्रांतिकारी जनता और समर्थकों को आह्वान करता है।

इस अवसर पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) 2025 अगस्त से 2026 अगस्त तक भारत के क्रान्तिकारी आंदोलन में प्राण गंवाने वाले सभी वीरयोद्धाओं को नाम-नाम से विनम्रतापूर्वक क्रान्तिकारी जोहार समर्पित करता है।

मोदी-शाह फासीस्ट बीजेपी, आरएसएस ब्राह्मणवादी शक्तियों द्वारा लाए गए अत्यंत निरंकुश ऑपरेशन कगार का विरोध करते हुए, क्रान्तिकारी आंदोलन की रक्षा करते हुए और क्रान्ति का पुनर्निर्माण करने के कर्तव्य को आगे बढ़ाते हुए गिरने वाले जन वीरों के त्याग व्यर्थ न जाएं। अमरवीरों ने आखिरी सांस तक संघर्ष करने के लिए ही तैयारी की थी। हार मुंह पर खड़ी होने पर भी उन्होंने हथियार डालने से इंकार किया था। क्योंकि उन्हें लगा कि उनकी आत्मसमर्पण देश की जनता और क्रांतिकारी आंदोलन को नैतिक रूप से क्षति पहुंचाएगी। उन अमरवीरों की क्रांतिकारी स्मृति को विनम्रतापूर्वक जोहार समर्पित करें! शोषण, उत्पीड़न रहित नए समाज का निर्माण करना ही उनके सपनों को पूरा करना है। क्रांतिकारी आंदोलन को फिर से निर्मित करने के लिए निरंतर प्रयास करने का संकल्प लें।

इस साल के दौरान केंद्र समिति से लेकर आम जनता तक सैकडों वीरों ने नव जनवादी लक्ष्य की प्राप्ति में शहादत दी। इनमें सीपीआई (माओवादी) की पोलिट ब्यूरो के सीनियर सदस्य, भारत की क्रांति के निर्माता महान नेता काम्रेड किशन दा (प्रशांत बोस) रांची जेल में अमानवीय परिस्थितियों के बीच पांच वर्षों तक कैद रहे और सही इलाज न मिलने के कारण लगभग 80 वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। इसी प्रकार शत्रु द्वारा किए गए एनकाउंटर हमलों में केंद्र समिति के काम्रेड्स कोसा, मोडेम बालकृष्ण, पाका हनुमंतु, पातीराम मांझी (अनल), खाता रामचंद्रा रेड्डी, सहदेव सोरेन, हिड्मा शहीद हुए। काम्रेड्स कोसा, खाता रामचंद्रा रेड्डी और हिड्मा को शत्रु ने गिरफ्तार कर यातना देकर हत्या की। चंद्रहास, भावरी बंधु सेठी (अलोक), पड़कल स्वामी, जाड़ी वेंकट, विजय, मट्टूरि जोगा राव, सुगुणा, भाग्या जैसे राष्ट्रीय स्तर और डिवीजन स्तर के नेताओं ने कई तिन-चार दशक अपने जीवन को क्रांतिकारी लक्ष्य के लिए समर्पित किया और हमें बहुत कीमती पाठ छोड़ गए।

देश में 2026 मार्च 31 तक हमारी पार्टी को पूरी तरह से नष्ट करने के उद्देश्य से केंद्र में मोदी-शाह की नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने ऑपरेशन कगार शुरू किया। सूरजकुंड योजना का हिस्सा बने 'ऑपरेशन कागर' नामक यह हमला, पिछले 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' और 'समाधान' की तीव्रतावाली रूप है। दरअसल 'ऑपरेशन कगार' केवल माओवादी आंदोलन पर लड़ा गया युद्ध नहीं है, बल्कि यह आदिवासियों की नरसंहार है। इस शिकारी अभियान के लिए लाखों सशक्त बलों को तैनात किया और विमानों व ड्रोन हमलों की शुरुआत की। इस कत्लेआम को रोकने के संघर्ष में हजारों पार्टी नेताओं, पीएलजीए (PLGA) कमांडरों और आदिवासी जन संगठनों के नेता शहीद हुए। हालांकि कुछ गद्दारों के कारण और पार्टी

की कुछ राजनीतिक और सैनिक गलतियों के चलते इन वीरतापूर्ण संघर्ष भी इस क्रूर दमन से बचा नहीं पाया और हमारी आंदोलन तत्कालिन रूप में ही सही हार गयी है। इन परिणामों से हमें सैद्धांतिक, राजनीतिक और सैनिक सबक सीखने चाहिए। हमें यह काम अवश्य पूरा करना चाहिए। लेकिन, इन शहीद वीरों की स्मृति दिवस के मौके पर, क्रांतिवादी झंडा हाथ में लेकर अंतिम सांस तक लड़ने वाले उन क्रान्तिकारी नेताओं और सैनिकों के जीवन से पहले तो प्रेरणा प्राप्त करें।

शहीदों के दिलों में शोषक वर्गों के प्रति तीव्र वर्ग नफरत थी और श्रमिक जनता के प्रति अनंत प्रेम था। उन्होंने 'जन ही इतिहास निर्माता हैं' वाले मार्क्सवादी सिद्धांत को दृढ़ता से माना। उन्होंने लोगों के हितों और कल्याण को अपना स्वयं का हित माना। वे बहुत साधारण ढंग से जिए और सरलता की मिसाल बने। "जनता के लिए कई क्रान्तिकारियों ने अपनी जान कुर्बान की है। उनकी यादें हमारे दिलों को छूती हैं। ऐसी स्थिति में हममें क्या स्वार्थ हो सकता है जो त्याग करने से रोकता हो? क्या ऐसी कोई गलती हो सकती है जिसे सुधारा न जा सके?" - माओ के इन उक्तियों को उन्होंने अपनाया। निरंतर स्वयं को सुधरते हुए और आत्मालोचना करते हुए उनका कतारों और जनता के दिलों में स्थायी स्थान पा लिये।

"अच्छा काम करना आसान है, लेकिन जीवनभर अच्छे ढंग से जीना कठिन है। कुछ समय तक क्रांतिकारी के रूप में जीना आसान है, लेकिन जीवनभर क्रांतिकारी के रूप में जीना और क्रांतिकारी के रूप में ही जीवन समाप्त करना अत्यंत कठिन है" — माओ के इन वचनों को इन अमर शहीदों ने अपनी मृत्यु से सिद्ध करके क्रांति के शिखर पर पहुँच गए।

अमर हुए कॉमरेडों ने मज़दूर वर्ग का लाल झंडा हाथ में थामकर मृत्यु का सामना किया। उनके जीवन का, उनके बलिदान का अध्ययन करने पर हम कई बातें सीखते हैं। उनके त्याग से प्राप्त प्रेरणा के साथ आने वाले दिनों में क्रांति का पुनर्निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए। हमारे प्रिय नेताओं की स्मृतियाँ क्रांतिकारी श्रेणियों को निरंतर प्रेरित करती रहती हैं।

इन महान क्रांतिकारी नेताओं के जीवन ही भारत में क्रांतिकारी मार्ग को समझने और उसे आगे बढ़ाने के लिए एक मज़बूत नींव हैं। इसलिए, क्रांतिकारी आंदोलन का पुनर्निर्माण करने के लिए इन अमर शहीदों के जीवन चरित्रों का गहराई से अध्ययन करें। उनके दिखाए प्रकाश के मार्ग पर चलें। उनके रक्त से सना वह लाल झंडा और ऊँचाई पर लहराते हुए, वर्ग संघर्षों को तीव्र बनाते हुए क्रांति आंदोलन का निर्माण करना ही उन अमर शहीदों को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है!

प्रिय जनता, क्रान्तिकारी श्रेणियों के लिए!

एक तरफ देश में माओवादी आंदोलन को समूल रूप से उखाड़ फेंका गया है, यह घोषणा मोदी-शाह ने संसद में गर्व के साथ की। देश भर में हो रहे जन आंदोलनों को, और उनका नेत्रुत्व करने वालोंको प्रशासन द्वारा 'अर्बन माओवादी' घोषित किया जा रहा है। ताज़ा रूप से रिपब्लिक टीवी द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लेने वाले मोदी ने बार-बार माओवादी आंदोलन उखाड़ने का उल्लेख किया। कॉर्पोरेट-अनुकूल विकास मॉडल को आसानी से लागू किया जा सकता है, यह घोषणा की।

दूसरी ओर, दंडकारण्य और अन्य क्रांतिकारी क्षेत्रों में शहीद स्मारकों को तोड़ा जा रहा है, माता-पिता, बंधु-मित्र जो अपने प्रियजनों के लिए स्मारक बनवाना चाहते हैं, उन्हें बनने नहीं दिया जा रहा। स्मृति सभाओं को रोक दिया जा रहा है। देश के इतिहास से माओवादी आंदोलन, प्रतीकों, उसकी उपलब्धियों को मिटाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। मिटाने से मिटने वाला इतिहास नहीं है हमारा।

हमारी पार्टी मुख्य रूप से दुश्मन के दमन, गद्दारी के कारण, कुछ मात्रा में स्वयं की त्रुटियों के कारण अस्थायी हार का सामना कर रही है। यह अस्वीकार न किया जाने वाला वास्तविक तथ्य है। लेकिन इस हार को देखते हुए हमें विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। देश में विभिन्न वर्गों की जनता पर फासीवादी उत्पीड़न हो रहा है। छत्तीसगढ़, ओडिशा, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश में विस्थापन विरोधी संघर्ष चल रहा है। दूसरी ओर संगठित और असंगठित मजदूरों के संघर्ष, किसानों, बेरोजगारों और छात्रों के आन्दोलन हर साल देश की राजधानी तक पहुँच रहे हैं। मुस्लिम और ईसाइयों को देश में दूसरे दर्जे के नागरिक बनाया जा रहा है। विपक्षी पार्टियों को भी फासिस्ट बीजेपी द्वारा उपेक्षित नहीं छोड़ा जा रहा है। आज देश में क्रान्ति के लिए आवश्यक अवसर प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। इनका उपयोग करके क्रान्तिकारी आन्दोलन का पुनर्निर्माण करने हेतु पुनस्समर्पित होना ही हमारे अमर शहीदों को देने वाली सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बिना बड़े त्याग के दुनिया में कोई क्रांति विजय नहीं हासिल कर सकती। आज क्रांति की सफलता के लिए और भी कठिन यात्रा केलिए तैयार होना आज का समय की मांग है। लड़ने की हिम्मत ही जनता को अजेय बनाती है। अनुकूल परिस्थितियों का सशक्त रूप से उपयोग करते हुए, शहीदों के खून से लाल झंडा उठाकर जनयुद्ध के रास्ते पर दृढ़ता से अग्रसर हों! हमारे देश को सभी उत्पीड़नों से मुक्त करके दमन और अन्याय को जगह न देने वाले नए लोकतांत्रिक भारत को निर्मित करें।

• 28 जुलाई से 3 अगस्त तक देशव्यापी रूप से हमारी पार्टी की इकाइयाँ, सहानुभूति रखने वाले जो गाँवों, कस्बों, शहरों में, स्कूल-कॉलेज, यूनिवर्सिटीओं में, औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में कार्यस्थलों पर स्थिति को ध्यान में रखते हुए गुप्त या खुले तौर पर क्रांतिकारी आन्दोलन में शहीदों के त्यागों को स्मरण करते हुए, उनके अमरत्व को ऊँचा उठाते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पार्टी श्रेणियों और पीड़ित जनता को आह्वान कर रहे हैं।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

10 जून, 2026